अध्याय - 8

पुस्तकालय की भूमिका

"प्रस्तुत अध्याय में पुस्तकालय की अवधारणा, परिभाषा, ग्रामीण पुस्तकालय का उद्देश्य सामुदायिक सूचना में पुस्तकालय की भूमिका का अध्ययन सहित पुस्तकालय की भूमिका के बारे में सर्वेक्षण से ज्ञात तथ्यों का विवेचन किया गया है।"

अवधारणा

भारतीय सभ्यता यदि आज विश्व के प्राचीनतम सभ्यता में गिनी जाती है। तो सभ्यता के साथ ही प्राचीन मान्यताओं, सामाजिक रीति-रिवाजों एवं व्यवस्था की भांति भारतीय ग्रंथालय भी प्राचीन मानी जा सकती है। भारत में लोगों की नवीन ज्ञान की जिज्ञासा ने प्राचीन काल से ही ग्रंथालयों के आवश्यकता हेतु अहम भूमिका निभाई। प्राचीन भारत में लोग मानवीय ज्ञान को सहज कर रखने एवं आने वाली पीढ़ी को मार्गदर्शन देने के उद्देश्य से लिखने, खोदने, अंकन करने हेतु प्रेरित हुए तथा इन्हीं सामग्रियों को सहेज कर रखे जाने के लिए चयनित स्थल पुस्तकालय कहलाया। अर्थात जबसे मानव ने लिख कर अभिलेख संग्रहण सीखा तब से पुस्तकालय की आवश्यकता तार्किक रूप से महसूस की गई। जे.एच.शेरा के शब्दों में "ग्रंथालय हमारी सांस्कृतिक व बौद्धिक परिपक्वता का घोतक है।" हांलाकि पुस्तकालय की उत्पत्ति के संबंध में कोई ऐतिहासिक अभिलेख प्राप्त नहीं है फिर भी सारी दुनियां में ऐसे साक्ष्य बचे हुए हैं जो इस दिशा की ओर इंगित करती है कि पहले भी पुस्तकालय थे तथा इनमें चर्च, मंदिर व राज्य के अभिलेख संग्रहित किए जाते थे। उस काल में यह शासक वर्ग तक सीमित रहता था परंतु इसका एक भाग वस्तुओ के संग्रहालय के रूप में उपयोग किया जाता था। [114]

कालखण्ड की प्रगति के अनुसार व ज्ञान पिपासा के सतत् यात्रा के परिणाम स्वरूप चर्च व मंदिर के अलावा शिक्षा जगत से संबंधित अनेक छोटे-बड़े शिक्षा संस्थानों की स्थापना की गई। इसके साथ ही क्रांतियों और सुधारवादियों आंदोलनों के फलस्वरूप पुस्तकालयों का उपयोग वृहद होता गया। फिर भी इसकी उपयोगिता एक विशिष्ट वर्ग तक सीमित रही। विज्ञान ने जब छपाई मशीनों का अविष्कार किया तो जन सामान्य और ग्रंथालयों के बीच की दूरी कम हुई। प्रजातांत्रिक व्यवस्था, मानव अधिकार का विचार, मध्यम वर्ग का उदय और सामाजिक - राजनीतिक क्रांतियों के फलस्वरूप विविध विषयों की ग्रंथ उपलब्ध होने लगी, इससे पुस्तकालय आंदोलन को एक नई पहचान मिली।

आज हम यह निश्चिय पूर्वक कह सकते हैं कि पुस्तकालय एक सामाजिक संगठन है, वह समाज की सांस्कृतिक यात्रा का परिणाम है। पुराने पुस्तकालयों का उचित संग्रहण हमारी सांस्कृतिक धरोहर बन गया है। इन्हीं को आधार मान कर मानव जाति अपनी बौद्धिक यात्रा को भविष्य की ओर ले जाती है। सामाजिक परिवर्तन के एक एजेंसी के रूप में वर्तमान पुस्तकालयों को जाना जाता है। जो विचार हस्तलिखित हो किताबों में हो व किसी भी अभिलेख में हो, उन्हें संग्रहित व संगठित करना, उनकी रक्षा करना और उन विचारों का समाजीकरण करना जिनका फिर प्रसारण किया जाना संभव हो, सामाजिक परिवर्तन के निहितार्थ पुस्तकालय के कृत्य है। इस प्रकार पुस्तकालय हमें पूर्वजों द्वारा अर्जित ज्ञान को उपलब्ध करवाते हैं और यही प्रक्रिया पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित होती रहती है।

पुस्तकालयों पर जो सामाजिक दायित्व समाज ने आरोपित किया है उसके निर्वहन में अनेक समस्याएं आती है। किसी एक पुस्तकालय में ज्ञान के सभी स्त्रोतों का संवर्धन संभव नहीं है फलतः पुस्तकालयों का भी विषयानुसार श्रेणीकरण किया गया है।

सार्वजनिक ग्रंथालय समाज का हृदय स्थल होता है। समाज तथा ग्रंथालय एक दूसरे पर आधारित एवं जुड़े हुए हैं। ग्रंथालय के बिना समाज की कोई पहचान नहीं बनती और समाज बिना ग्रंथालय की उत्पत्ति नहीं है। प्रजातंत्र के सफल संचालन में प्रजातंत्रिक अंगों को ग्रंथालय की आवश्यकता बनी रहती है और अब तो ग्रंथालय आधुनिक ढंग से संगठित और व्यावसायिक तौर पर सेवाएं देने हेतु व्यवस्थित होने लगी हैं। वर्तमान परिवेश में सूचनाओं का जो कि विविध विषय क्षेत्रों से संबंधित है अपना एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है जो मानव सभ्यता के विविध आयामों को प्रस्फुटित करने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

पुस्तकालय आधुनिक समाज के समग्र संचार प्रतिमान का एक अत्यावश्यक अंग है। लोकतंत्र का आगमन और विकास, शिक्षा के क्षितिज का विस्तार, शोध का तीव्रीकरण और सूचना व ज्ञान का विस्फोट से अच्छा संग्रह, अच्छा स्टाफ, अच्छा संगठित और अद्यतन पुस्तकालय की सेवा अनिवार्य हो गया है। राष्ट्र निर्माण में विशेषकर समुदायिक विकास में पुस्तकालयों के महत्व को मुश्किल से उपेक्षित किया जा सकता है। पुस्तकालय का विकास कभी भी निर्जन स्थान में नहीं होता है। यह हमेशा समाज के दो मूल कार्यो ज्ञान के विस्तार और संरक्षण के साथ में चलता है। [44]

परिभाषा :-

ब्रिटानिका के नये विश्वकोष में ग्रंथालय शब्द को वर्णित किया गया है कि ''ग्रंथालय एक भवन, कमरा या कमरों का समूह है, जहां पुस्तकों का संग्रहण लोगों के उपयोग के लिए होता है ।'' (मैक्रोपीडिया, खंड - 10, बैदन 1977, पृ. 856)

ऑक्सफोर्ड शब्दकोष में ग्रंथालय शब्द इस प्रकार परिभाषित है कि ''पुस्तकालय, पुस्तकों का संग्रह है जिसका उपयोग लोग या लोगों के कुछ वर्ग के द्वारा होता है ।'' (फ्लावर एंड फ्लावर 1983, पृ. 579)

उपर्युक्त तथ्यों से संभवतः कुछ ग्रहण करते हुए भारतीय ग्रंथालय आंदोलन के जनक डॉ. एस. आर. रंगनाथन ने पुस्तकालय शब्द को परिभाषित किया कि ''पुस्तकालय एक लोक संस्था है, जहां पुस्तकों का सावधानी पूर्वक संग्रहण के साथ उन लोगों तक पहुंचाने का कर्तव्य है जिन्हें उसके उपयोग की आवश्यकता है ।'' (रंगनाथन, 1993, पृ. 209)

ग्रंथालय शब्द की संधि विच्छेद कर परिभाषित करने पर-ग्रंथ+आलय, अर्थात वे स्थान जहां ज्ञान से परिपूर्ण शास्त्रों, ग्रंथों एवं हस्तलिपियों को सहेजकर रखा जाए ग्रंथालय कहलाता है ।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि ग्रंथालय, पुस्तकों का एक भंडार गृह है अथवा उसके पाठकों में सूचना का प्रसार, परिरक्षण, प्रकियात्मक और प्राप्ति के कार्य सहित अभिलिखित ज्ञान का सुपुर्दगी है ।

कार्य के आधार पर आधुनिक ग्रंथालयों को तीन मूल समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है। वे हैं :-

1- सार्वजनिक

2- अकादमिक और

3- विशेष

ग्रंथालयों की प्रकार का निरपेक्ष किसी भी पुस्तकालय का मूल लक्ष्य समुदाय को वांछित सूचना सेवा प्रदान करना है । साधारण प्रसंग में समुदाय शब्द अलग - अलग समझा

गया है। समुदाय की सेवा ग्रंथालय में उपलब्ध सुविधाएं के माध्यम से सार्वजनिक ग्रंथालय पद्धति अथवा सामुदायिक सूचना केन्द्र के द्वारा की जा सकती है। सार्वजनिक ग्रंथालय की विशिष्टता में समुदाय में सामान्य जनता है जो कि व्यक्तियों के जातियों का ध्यान दिए बिना, रंग, रूप, लिंग, शैक्षणिक और आर्थिक स्तर शामिल है।

इस संदर्भ में सार्वजनकि ग्रंथालय की परिभाषा जैसा कि यूनेस्को पब्लिक लाइब्रेरी घोषणा पत्र में नियत है, का बहुत महत्व है :-

" सार्वजनिक या लोकप्रिय पुस्तकालय वह है जो समुदाय या क्षेत्र की जनसंख्या को निःशुल्क या न्युनतम शुल्क पर सेवा उपलब्ध कराती है। वे सामान्य जन या लोगों के विशिष्ट श्रेणियों जैसे बच्चों, सशस्त्र बलों के सदस्यों, चिकित्सालय रोगियों, कैदी, कामगारों तथा कर्मचारियों की सेवा कर सके।" (कैम्पबेल, 1983 पृ. 13)

रॉल्क बाल्डो इन ने सार्वजनिक पुस्तकालय शब्द को "ऐसी जगह जिसे ज्ञानी तथा निपुण लोगों द्वारा (जो सभ्य देशों से आये हों) अपने अनुभवों, ज्ञान तथा विद्वता को कुशलता पूर्वक लयबद्ध कर स्थापित किया गया है" के रूप में परिभाषित किया है। (चक्रवर्ती, 1993 पृ. 60)

इस प्रकार सार्वजनिक पुस्तकालय शैक्षणिक महत्व के साथ-साथ समुदाय के लागों में निःशुल्क सूचना के विस्तार का एक स्थान है।

ग्रामीण पुस्तकालय :-

भारत मुख्यतः एक कृषि प्रधान एवं ग्रामीणों का देश है जिसकी लगभग अस्सी प्रतिशत आबादी गांवों में निवास करती है। गांव की नजर में पुस्तकालय का मतलब शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग और समाज के उन्मुखीकरण की दिशा में एक अत्यावश्यक साधन है।

[61]

ग्रामीण पुस्तकालयों का मुख्य उदेद्श्य निम्नानुसार है :-

1- गांव के अपूर्ण शिक्षित बच्चों एवं बुनकरों को शिक्षा के सिद्धांत और ज्ञान को तरो ताजा रखने में सहयता करना, जिसे उन्होंने अपनी पढ़ाई और प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त किया।

2- हमारे कृषकों के कार्यक्षमता बढ़ाने में सहायता, खाद्य और भूमि की उर्वरता, कृषि उपज एवं विपणन, पशुधन, उत्पादकों और उपभोक्ताओं में सहयोग की भावनायें, बढ़ईगिरी, कृषि कारीगर, कृषि के मौलिक यंत्रकला, फसल सुरक्षा बीमा की जानकारी सुलभ कराने में सहायक है ।

3- ग्रामीणों को भूमि को उपजाऊ, संरक्षित और धनवान बनाने में सहायता करना जो कि राष्ट्र की विरासत है, इनकों वर्षा और निकास नाली, विविध प्रकार की उचित उपयोग की जाने वाली भूमि उत्पादन और वृक्ष उपजों की उपयोगिताओं की जानकारी के साधन प्रदान करना ।

4- ग्रामीणों को भारत की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और विविध राष्ट्रीय एकता को मजबूत प्रदान करने वाली योजनाओं एवं परियोजनाओं को समझने में सहायता करना।

5- ग्रामीणों की जीवकोपार्जन की प्रवृत्तियों, जनसंख्या अभिवृद्धि और गांवों कस्बों एवं शहरों से परिचित कराकर आपसी संबंध स्थापित कराता है ।

6- एक ग्रामीण पुस्तकालय को संपूर्ण पारिवारिक जिदंगी को बनाने में सहायता करनी चाहिए। इसे सामुदायिक और व्यक्तिगत रूप से स्वास्थ, बच्चों के प्रति जागरूकता, परिवार नियोजन और आधार भूत शिक्षा संबंधी विषय वस्तु प्रदान करनी चाहिए।

7- अंत्तोगोत्वा, ग्रामीण व्यक्ति को पुस्तकों, पत्रिकाओं, पाम्पलेट्स इत्यादि के उपयोगिता, मनोरंजन के लिए चलचित्र, कल्पनाओं और भावनाओं की वृद्धि में सहायता प्रदान करता है ।

ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालयों का सबसे अच्छा उपयोग करने के लिए निम्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए :-

पहला, युवकों को साक्षर/ पढ़ाने - लिखाने के लिए कई साधन अपनाने चाहिए और सामाजिक शिक्षा को प्राप्त करने के प्रति रूचि जागृत बनाये रखने हेतु आधुनिक साधन का उपयोग करना चाहिये ।

दूसरा, लोगों पर बीते हुए बुरी दशा को जीतने के लिए प्रभावशाली कदम उठाना चाहिए।

तीसरा, युवकों /पौढ़ों के लिए शिक्षकों की अत्यंत अभाव है ।

चौथा, युवकों में शिक्षा की उपलब्धता व निर्देश का स्तर एवं मात्रात्मक अभिवृद्धि की अनिवार्य आवश्यकता है ।

शिक्षक इस बात पर सहमत है कि पढ़ने-लिखने की योग्यता/ ज्ञान को अपने आप में पूर्ण नहीं समझना चाहिए । यह युवकों के संपूर्ण जीवन को सुधारने का एक तरीका है ।

(61)

सामुदायिक सूचना में ग्रंथालय की भूमिका

समुदाय :-

शिशु परिवार में जन्म लेता हैं । वह ज्यों-ज्यों बड़ा होता है और उसकी बुद्धि का विकास होता है, उसे आस-पास की वस्तुओं, पड़ोस, गांव, नगर, जनपद, राज्य, देश और यहां तक ब्रहांण्ड का ज्ञान होता जाता है । इस प्रकार व्यक्ति का जन्म केवल परिवार में ही नहीं बल्कि समुदाय में भी होता है । परंतु प्रारंभ में वह समुदाय से परिचित नहीं होता । आयु के बढ़ने के साथ-साथ उसे समुदाय का ज्ञान होने लगता है और उससे वह अपना आत्मिक संबंध मानने लगता है । गांव समुदाय का सर्वोत्तम उदाहरण है । समुदाय का विचार पड़ोस से आरंभ होता है और अंत में समुदाय संबंधी उसका विचार संपूर्ण तक पहुंच जाता है ।

वास्तव में समुदाय ऐसा मानव समुह है जिसे औपचारिक रूप से संगठित नहीं किया जाता है । वह स्वतः ही उत्पन्न होता है । किसी निश्चित योजना या संविदा के अनुसार लोग एक छोटे से भौगोलिक क्षेत्र में सामान्य जीवन व्यतीत करने के लिए रहते हैं । उनके समस्त सामाजिक संबंध उसी के अंतर्गत होते हैं । उनकी समस्त आवश्यकताएं उस सामुदायिक जीवन में ही पूरी होती है । समुदाय के सदस्यों की महत्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि वे अपने सदस्यों की आलोचना और प्रशंसा दोनो ही करते हैं । मनोवैज्ञानिक रूप से समुदाय के सदस्यों का आचरण समुदाय के जीवन द्वारा नियंत्रित होता है । [113]

अनेक विद्वानों ने समुदाय की विभिन्न परिभाषाएं की हैं ।

जी. डी. एच. कौल के अनुसार -'' समुदाय का अभिप्राय ऐसे सामाजिक जीवन से है जिसमें ऐसे अनेक मनुष्य सम्मिलित रहते हैं, जो सामाजिक संबंधों की परिस्थितियों के अंतर्गत साथ-साथ रहते हैं, जो परिवर्तन होने पर भी समान बनी रहने वाली रूढ़ियों और प्रचलनों द्वारा परस्पर संबद्ध होते होते हैं तथा उनमें कुछ सीमा तक सामान्य सामाजिक लक्ष्यों और रूचियों की समझ होती है ।''

एफ.एल. लुम्ले के अनुसार -'' समुदाय किसी स्थान पर स्थाई रूप से समवेत उन व्यक्तियों को कहते हैं जिनके हित समान हो या भिन्न हों और उनके हितों को पूरा करने के लिए भिन्न भिन्न संस्थाएं बनी हों ।''

मैजर के शब्दों में -'' वह समाज जो किसी निश्चित भोगौलिक स्थान पर रहता है, समुदाय कहा जा सकता है ।''

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि एक समुदाय में कई विशेषताओं का होना आवश्यक होता है । ये विशेषताएं निश्चित भूभाग, मनुष्यों का समुह, सामुदायिक भावना, समानताएं, स्वाभाविकता, विशेष नाम, सामाजिक आत्मनिर्भता, लक्ष्यों की व्यापकता आदि है। यद्यपि समुदाय के लिए निश्चित भू-भाग में आवास करना आवश्यक माना जाता है लेकिन घुमंतू जातियों या जनजातियों के समुदायों के लिए इस प्रकार की आवश्यकता देखने में नहीं आती।[113] एक समुदाय में प्रायः समान भाषा, समान ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि , पारस्परिक स्नेह व सहयोग आदि के फलस्वरूप संगठित व्यवस्था देखने में आती है ।

सामुदायिक कल्याण

सामुदायिक कल्याण का अभिप्राय एक क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों के जीवन को उत्तम बनाने के लिए उनकी शिक्षा, आवास, परिवहन, स्वास्थ्य, स्वच्छता तथा जीवनोपयोगी अन्य सुविधाओं को प्रदान करना है ।[113] समुदायिक कल्याण के कार्यक्रम लागू करते समय तीन लक्ष्य सामने होते हैं :-

1- सामाजिक आवश्यकताओं का निर्धारण करना

2- लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सावधानीपूर्वक आयोजन करना

3- इस लक्ष्य के प्राप्ति हेतु समुदाय की शक्तियों को गतिशील बनाना ।

वर्तमान लोक कल्याणकारी राज्य सामुदायिक कल्याण की ओर विशेष ध्यान दे रहे हैं।

सामुदायिक कल्याण सेवाएं :-

सामुदायिक विकास का आशय किसी भी समुदाय का कल्याण तथा विकास संबंधी कार्य है और वह समुदाय ग्रामीण नागरिक तथा जनजातीय आदि कैसा भी हो सकता है । भारत में समुदाय के सदस्यों को ऐसी समाज कल्याण सेवाएं प्रदान करने का प्रयास किया जाता है जैसे शिशु विहार, बालवाड़ी, समाज शिक्षा, प्रसूति सेवाएं, मनोरंजनात्मक क्रिया कलाप आदि। इस प्रकार कार्य क्षेत्र के साथ ही सामुदायिक संगठन का एक एक कार्य विधि भी है । सामुदायिक केंद्र की सेवाओं में स्वस्थ्य शिक्षा, आवास, गृह, मनोरंजन, पोषण तथा समाज कल्याण से संबंध सेवाएं होती हैं , जिनका संगठन समुदाय के लिए समुदाय करता है । [113]

सामुदायिक संगठन :-

सामुदायिक संगठन में किसी भोगौलिक क्षेत्र के सामाजिक साधनों को वहां की संपूर्ण एवं आंशिक समाज कल्याण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति में प्रभावशाली ढंग से लगाने का प्रयास किया जाता है । इसके क्रियात्मक संगठन में तथ्योन्वेषण समन्वय, स्तर सुधार, व्याख्या, समाज कल्याण संबंधी कार्यक्रमों का विकास, सामाजिक कार्य की क्रियात्मक संरचनाओं में परिवर्तन और सामाजिक कानूनों का संशोधन- संवर्धन सम्मिलित होते हैं ।

सामुदायिक संगठन के चरण इस प्रकार हैं :-

1- समुदाय की विधिवत सर्वेक्षण

2- समुदाय की सामाजिक आवश्यकताओं का पता लगाना और उनमें प्राथमिकताएं निश्चित करना ।

3- आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विद्यमान साधनों का पता लगाना ।

4- समाज कल्याण के कार्यक्रम में बाधक सामाजिक बुराइयों तथा सामाजिक आयोग्यताओं का निवारण तथा उनकी रोकथाम ।

5- आवश्यकताओं और साधनों को स्पष्ट रूप से बतान और बदलती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साधनों का लगातार मेल बैठाते रहना ।

सामुदायिक संगठन की विधि का उपयोग विविध क्षेत्रों में किया जा सकता है । इसके कुछ कार्य क्षेत्र हैं - आर्थिक क्षेत्र, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़कें और मकान, मनोरंजन, सांस्कृतिक क्रियाकलाप, सामाजिक सेवा आदि ।

सामुदायिक सूचना :-

सामुदायकि सूचना, वह सूचना है, जिससे समुदाय के सदस्यों की आवश्यकता को समाज के अंदर में उपलब्ध संसाधनों के श्रेष्ठ उपयोग करने और उनके दैनिक समस्याओं के निवारण में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष मदद मिलती है ।

मार्टिन ने समुदायिक सूचना को 3 दिशाओं में दृष्टिगत किया (बलियार सिंह और महापात्र 1993, पृ. 68 में उद्धृत)

1- समस्त सूचनाओं का संक्षिप्त अभिप्राय यह है कि समाज में लोगो की आवश्यकता जिसमें सेवाएं, संसाधन, अधिकार, प्रदुषण, परमाणु निरस्त्रीकरण, ताजा राजनीतिक मुद्दा, सरकार के बारे में सूचना और जीवन इत्यादि के लिए सूचना शामिल हैं,

2- समुदाय के विशेष समूह हेतु सूचना निर्देश, उपयोगकर्त्ताओं का विशिष्ट समूह, जनता तथा इससे वंचित समुदाय आदि,

3- पुस्तकालय संघ द्वारा प्रस्तुत सूचना सेवाएं (जैसे यूनाईटेड किंगडम का पुस्तकालय संघ) जो लोगों के दैनिक जीवन में सहायता करता है, वह सेवाएं जिसे लोग सामान्यतः प्रकट नहीं करते हैं और उन लोगों के लिए सूचना सेवाएं जो कुछ नहीं जानते हैं, इत्यादि ।

सर्वजनिक पुस्तकालय द्वारा सामुदायिक आवश्यकताओं के लिए किए जाने वाले कार्य या भूमिका के बारे में वर्णन इसके अवधारणा को अधिक स्पष्ट करता है । अतः किसी भी सार्वजनिक ग्रंथालय के मूल उद्देश्य निम्न हैं :-

1- समुदाय के सभी सदस्यों को समान रूप से निःशुल्क सूचना सेवा प्रदान करना, (यूनेस्को घोषणा पत्र 1972, इफ्ला द्वारा संशोधित)

2- व्यक्तिगत व्यक्तित्व की रक्षा करना,

3- व्यक्तिगत व्यक्तित्व का निर्माण करना ,

4- जीवन कैसा हो- जानने के लिए व्यक्तिगत सहायता,

5- नागरिकों की समस्याओं के निवारण हेतु सभी प्रकार की आवश्यक सूचनाएं प्रदान करना,

6- दैनिक जीवन या कार्य से संबंधित समस्याओं का सामना करने के लिए सूचना प्रदान करना ,

यूनेस्को द्वारा सार्वजनिक ग्रंथालय से संबंधित सूचना साक्षरता, शिक्षा और सांस्कृति हेतु मुख्य लक्ष्य के रूप में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया गया - [47]

1- प्रारंभिक अवस्था से ही बच्चों में अध्ययन आदत की स्थापना एवं मजबूती का अध्ययन।

2- व्यक्तित्व विकास निर्माण के लिए अवसर प्रदान करना।

3- वैज्ञानिक उपलब्धियों एवं नवीन पद्धतियों, कला का सम्मान तथा सांस्कृतिय विरासत की जागृति को बढ़ावा देना ।

4- मौखिक परंपरा को प्रोत्साहित करना ।

5- औपचारिक शिक्षा को सभी स्तर पर व्यक्तिगत और स्वसंचालित शिक्षा को संयुक्त रूप से प्रोत्साहित करना ।

6- बच्चे और युवा लोगों की कल्पना शक्ति एवं रचनात्मक को उद्दीप्त करना ।

7- सभी निस्पादित कलाओं के सांस्कृतिक अभिव्यक्ति हेतु अभिगमन व्यवस्थित करना।

8- सांस्कृति भिन्नता का समर्थन और अंर्तसांस्कृतिक सम्वाद को विकसित करना ।

9- सामुदायिक सूचना हेतु सभी प्रकारों से नागरीको के लिए पहुंच सुनिश्चित करना।

10- स्थानीय एजेंसियों , संघो और संबंद्ध समूहो से यथेष्ठ सूचना सेवाएं प्रदाय करना।

11- संगणक साक्षरता में निपूर्णता और सूचना के विकास को सुविधाजनक बनाना ।

12- साक्षारता गतिविधियों में सहभागिता और प्रोत्साहित करना । सभी उम्र समूहों के लिए कार्यक्रमों और यदि अनिवार्य हो तो वास्तविक गतिविधियों के लिए पहल करना ।

पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है जो समाज की अनेकों तरह से सेवा करती है । इसकी भूमिका सामुदायिक सूचना के साथ-साथ शैक्षणिक, सूचनात्मक, आर्थिक, औद्योगिक तथा राजनैतिक इत्यादि अन्य क्षेत्रों से जुड़ी है ।

शैक्षणिक :-

शिक्षा उस प्रक्रिया को कहते हैं जिससे मनुष्य में ऐसी योग्यता का विकास होता है कि वह समाज का उपयोगी प्राणी बन सके । शिक्षा मानव अस्तित्व का द्वितीय जन्म है । इस विषय में अरस्तु का कहना है कि " शिक्षित व्यक्ति अशिक्षित से उतना ही श्रेष्ठ है जितना जीवित मृतक से।" प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री पेस्टालॉजी शिक्षा को मनुष्य की समस्त शक्तियों का स्वाभाविक समरस तथा प्रगतिशील विकास कहते हैं । (113) टी. रेमंट के कथनानुसार, शिक्षा विकास का वह क्रम है, जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं को विभिन्न रूप से आवश्यकतानुसार भौतिक और सामाजिक स्थितियों और वातावरण के अनुकूल बनाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षा एक चेतन शक्ति है जिसके द्वारा मनुष्य की सुषुप्त शक्तियां जागृत होती है । आधुनिक समाज में इस लक्ष्य को शिक्षा के संगठित पद्धति के द्वारा निष्पादित किया जाता है । जिसमें शैक्षणिक पुस्तकालय जुड़ा है । ऐसा प्रतीत होता है कि न केवल भारत जैसे विकासशील देशों में बल्कि यू. एस. ए. जैसे समृद्ध देशों में 70 % जनसंख्या जो ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत है, उन्हें भी जीवन पर्यन्त सूचना की आवश्यकता होती है । इस कार्य विकसीत राष्ट्रों में पुस्तकालयों तथा सामुदायिक सूचना केन्द्रों के द्वारा सक्रिय ढंग से निष्पादित की जा रही है ।

पुस्तकालय अभिलेखित ज्ञान के भंडार गृह को समुदाय की आवश्यकतानुरूप सामाग्रियों को न केवल परंपरागत प्रलेखीय रूप मे होना चाहिए वरन अन्य माध्यमो जैसे चलचित्र, स्लाइड, श्रव्य-दृश्य सामाग्री, कंप्यूटर, प्रिंटआउट टेपस, डिस्क प्लॉविज, इत्यादि रूपो में होना चाहिए ।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ा (सारिणी क्रमांक 5) प्रदर्शित करता है कि 300 बुनकरों में से 70 अशिक्षित हैं और 225 बुनकर साक्षर हैं परंतु उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं है । प्रतिदर्श उत्तरदाता सार्वजनिक पुस्तकालयों और सामुदायिक सूचना केन्द्रों से अपने प्राचीन परंपरागत बुनाई व्यवसाय से संबंधित सूचना न सिर्फ अपने कार्यिक उपयोगिता के लिए वरन् अपने शैक्षणिक तथा अत्याधिक लाभ के लिए चाहते हैं । अतः यह समय अत्याधिक उपयुक्त है कि राज्य और केन्द्र सरकार कोष्टा समुदाय के शैक्षणिक तथा व्यवसायिक उन्नति के लिए संयुक्त कार्य योजना तैयार कर उन्हें विविध तकनीकी ज्ञान हेतु सभी संबद्ध सूचना प्रदाय करवा कर यह बतलाया जावे कि बड़ी मात्रा में गुणवता युक्त कपड़े कैसे बुनाई में आवेष्टित की जाएगी ।

संस्कृति

इतिहास के अनवरत प्रवाह में समाज के द्वारा निर्मित उन सभी भौतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को तथा उन मूल्यों के सृजन तथा उपयोग और परित्याग के समस्त साधनों को संस्कृति करते हैं । संस्कृति एक ऐतिहासिक घटना प्रक्रिया है और इसका विकास सामाजिक-आर्थिक संघटनों के अनवरत क्रम से निश्चित होता है ।

संस्कृति शब्द की परिभाषा अनेक विद्वानों ने दी है । एडवर्ट बर्नेट टाइलर के अनुसार -" संस्कृति के अंतर्गत ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, विधि, रीति-रिवाज तथा रहन-सहन के ढंग आते हैं, जिन्हें मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में ग्रहण करता है ।" अमरीकी विद्वान लिंटन के अनुसार "ज्ञान तथा रहन-सहन के तरीकें जो मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते अपनाता है तथा जिसका प्रसार करता है उसे संस्कृति कहते हैं ।" बिट्स के अनुसार, " संस्कृति परिवेश का वह अंग है जो मानव से स्वयं निर्मित होता है ।"[113]

पुस्तकालय की परम्परागत भूमिका संचार माध्यम के एक भाग के रूप में सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करना है । एक समाज एकता सूत्र शक्ति के बिना समाज के लोगों को पकड़े रखने का कार्य नहीं कर सकती है और वह शक्ति संस्कृति के रूप में जानी जाती है । कलाओं विचारों और विश्वासों की समग्र अविष्कार यह सम्मिलित करता है जो मानव व्यवहार की विशेषताएं है।

प्रचलित अर्थ में पुस्तकालय को क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी सुस्पष्ट अभिलेख की उपलब्धता सुनिश्चित करना चाहिए जो व्यक्तिगत सदस्यों के सक्रिय प्रतिभा में ललितकला के मूल्यांकन की प्रेरणा को अभिव्यक्त कर सकेगा। ग्रंथायलों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजनों के द्वारा समुदाय के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध बनाने चाहिए।

समाज अनेक व्यक्तियों को जोड़ता है, जिनमें एक या विविध तरह से हताशा रहती है और इसका कारण अनेक सामाजिक बुराईयां है। इन सामाजिक बुराईयों को दूर करने, समाज में व्याप्त तनाव के उन्मूलन और समाज को साफ-स्वच्छ बनाये रखने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि पुस्तकालय समुदाय के लिए सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करें।

शोध

अनुसंधान का अर्थ है किसी समस्या या विषय का सावधानीपूर्वक गुण दोषान्वेषण करने वाला विधिवत अध्ययन। यह एक ऐसा प्रयास है, जिसका उद्देश्य अध्ययन एवं परीक्षण द्वारा नयी जानकारी हासिल करना है। समुदाय की समस्याओं की, उनसे प्रभावित लोगों की और उन्हें हल करने में प्रयुक्त विधियों की जानकारी हासिल करने की दृष्टि से सामाजिक अनुसंधान एक महत्वपूर्ण साधन है। अनुसंधान के बिना सामाजिक आयोजन का कार्य सफल नहीं हो सकता क्योंकि उसकी सहायता से ही आयोजन कर्त्ता समुदाय की आवश्यकताओं की जानकारी हासिल कर सकते हैं। पुस्तकालय इस अनुसंधान के विषय समस्याओं के निवारण में प्रयुक्त विधियों एवं प्रविधियों के परिशोधन में यथा साध्य संदर्भ उपलब्ध कराकर सहायक होता है।

समुदाय की भौतिक एवं सांस्कृतिक प्रगति अनुसंधान पर निर्भर है। शोध वर्तमान समाज की जीवनदायिनी है। सार्वजनिक पुस्तकालय या सामुदायिक सूचना केन्द्र प्राथमिक साहित्य के यथेष्ट मात्रा को प्रत्यक्ष रूप से प्रदाय करने में सहायता करती है जो कि किसीभी अनुसंधान का अत्यावश्यक संघटक है। अनुसंधान कार्यक्रमों के सहयोग के अनुक्रम में सार्वजनिक पुस्तकालयों को ऐसे प्रकाशनों की प्राप्ति के लिए प्रबंध करना चाहिए जो इसकी सेवाओं से समुदाय के अधिकांश सदस्यों हेतु लाभकारी हो सके।

सूचना :-

पदार्थ और ऊर्जा की भांति, सूचना समाज में मूल संशाधन है, ''समाज में भौतिक तथा मानसिक उत्पाद के पुनरूत्वत्ति में सूचना तथा इसका प्रवाह का अत्यधिक सार्थकता है ।'' प्राचीन समय में सूचना लोगों के दिमाग में एकत्रित होता था और वह सामाजिक संपर्क व संचार के द्वारा अघतन एवं रूपान्तरित हुआ करता था परंतु अब समाज विकसित और एक जटिल स्थिति में पहुंच चुका है, सूचना की अत्यधिक मात्रा उत्पन्न हो चुकी है फलतः सूचना विस्फोट के वर्तमान परिवेश में लोग भी सूचना प्राप्त करना चाहते हैं । ठीक ऐसे ही, पुस्तकालय का नाम परिवर्तित होकर अब सूचना केन्द्र होने लगा है और सूचना के प्रभाव पूर्ण विस्तार में जुड़ गया है ।

मनोरंजन

व्यक्ति अपने कार्य को संपन्न करने के बाद थकान व उबा महसूस करता है, इसके निवारण में मनोरंजन सहायक होता है और इसके लिए पुस्तकालय ही उचित स्थान है जहां मनोरंजनात्मक सामाग्रियां संग्रहित होता है । इन सामाग्रियों में छोटी कहानियां, उपन्यास, नवीन घटनाक्रम, लोकप्रिय पत्रिकाएं, समाचार पत्र इत्यादि शामिल हैं और पुस्तकालयय द्वारा इन सभी का प्रदाय से लोगों के चिंताओं एवं थकान के निवारण में सहायता मिलती है । इसके अतिरिक्त सामुदायिक ग्रंथालय लोगों के मनोरंजन के हितार्थ श्रव्य-दृश्य सामाग्रियों और विस्तार सेवाओं के द्वारा फिल्म प्रदर्शन, समूह परिचर्चा, लोक नृत्य आदि भी करती है ।

देश के वाणिज्यिक, तकनीकी और औद्योगिक विकास के लिए सूचना, समुदाय के क्षेत्रान्तर्गत सभी सदस्यों को जोड़ने के लिए उपकरण के रूप में सामुदायिक पुस्तकालय का अस्तित्व है । सार्वजनिक पुस्तकालय से लोग अनेक प्रेरणास्पद जानकारी ग्रहण करते हैं तथा अपने खाली समय का सदुपयोग मनोरंजन, प्रेरणा तथा अपनी जिज्ञासा के संतुष्टि के लिए करते हैं ।

रायगढ़ क्षेत्रीय कोष्टा समुदाय के बुनाई व्यवसाय में संलग्न लोगों को अपने कार्य से संबंधित एवं विकास हेतु विपणन, सरकारी नीति, वित्तीय सहायता, कच्ची सामाग्री आदि से जुड़े कई सूचना की आवश्यकताएं है और जिन्हें वे अपने कार्य क्षेत्र के अंदर सामुदायिक पुस्तकालय और सूचना केन्द्रों के स्थापना द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं ।

सार्वजनिक पुस्तकालय चेतना

सार्वजनिक पुस्तकालय चेतना से समुदाय के लोगों के मध्य में नई जागरूकता उत्पन्न होती है जो स्वयं द्वारा एकाएक जागृत नहीं होती । यह विविध विधियों व माध्यमों से संप्रेषित कई एजेंसियों को सम्मिलित करता है । यह अपेक्षित संस्थाएं जिनमें पुस्तकालय संघों, विदवतजनों, विश्वविद्यालयों, सरकारी संगठनों और सार्वजनिक पुस्तकालयों अथवा सामुदायिक सूचना केन्द्रों को जोड़ने का साहसिक व पवित्र कार्य प्रस्तुत करेगी ।

प्रस्तुत अध्ययन संकेत करती है कि रायगढ़ क्षेत्र के कोष्टा समुदाय के बुनकर कार्य में संलग्न लोगों के मन में सार्वजनिक ग्रंथालय सेवाओं की विचार प्रबल नहीं है । यह वास्तव में प्रदर्शित होता है कि सार्वजनिक ग्रंथालय अथवा सामुदायिक सूचना सेवाओं से संबंधित एजेंसियों का अभाव है । अध्ययन क्षेत्र के कोष्टा समुदाय के लोगों में सार्वजनिक ग्रंथालय सेवाओं और सामुदायिक सूचना के प्रति किसी भी संस्था द्वारा चेतना पैदा करने का प्रयास नहीं किया गया है । कोष्टा समुदाय हेतु आवश्यकता पर आधारित सूचना उपलब्ध कराने का प्रयास नहीं हुआ है तथा अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश कोष्टा पुस्तकालय के महत्व, भूमिका और उपयोगिता को महसूस करने में असमर्थ है । यह अपेक्षित है कि रायगढ़ क्षेत्रीय कोष्टा समुदाय हेतु ग्रामीण विकास से संबंद्ध विभागों, संगठनों और पुस्तकालय सह-सूचना केन्द्र विविध उन्नयन सेवाओं और आवश्यक सूचना के हस्तांतरण द्वारा उनमें शुरू से ही चेतन्यता पैदा करने में सकारात्मक कदम उठायेगें । कोष्टाओं के बुनाई व्यवसाय को मजबूती प्रदान करने में सूचना आवश्यकताओं की प्राप्ति में गैर प्रशिक्षित व्यक्ति के द्वारा ग्रंथालय सह-सूचना केन्द्र में सेवा प्रदान करने से बड़ी कठिनाई होगी । यह सर्वोत्तम समय न सिर्फ स्थानीय लोगों के लिए बल्कि सरकारी संस्थाएं, एजेंसियों, स्थानीय, अधिकृतों, प्रौढ़ शिक्षा क्षेत्र, जन संपर्क विभाग और कल्याण संगठन , स्थानीय क्लब आदि के संयुक्त प्रयास से रायगढ़ क्षेत्रीय कोष्टा समुदाय में साक्षरता कार्यक्रम और सार्वजनिक ग्रंथालय चेतना की शुरूआत उनमें विस्तार गतिविधियों की विविध विधियों के द्वारा लायी जा सकती है । इन विस्तार सेवाओं में व्याख्यान, समूह परिचर्चा, प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, श्रव्य-दृश्य दिखाना , पोस्टरस और चल पुस्तकालय सेवाएं सम्मिलित है ।

सारिणी क्रमांक - 11

(पुस्तकालय की भूमिका)

क्र.	विषय	प्रतिदर्श बुनकरों की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1-	सिर्फ पुस्तकालय का ज्ञान परंतु समुदाय में इसकी भूमिका का ज्ञान नहीं	300	39	43%
2-	यदि ग्रंथालय उनके क्षेत्र में स्थापित हो तो अपने व्यवसाय से संबंधित सूचना पाने के लिए उत्सुक	300	294	98%
3-	ग्रंथालय स्थापना हेतु शासन से मांग	300	27	9%
4-	रूचिगत क्षेत्र में ग्रंथालय सेवाएं स्वीकार करने की इच्छा	300	285	95%
5-	सशुल्क आधारित ग्रंथालय सेवा हेतु सम्मति	300	240	80%

पुस्तकालय के बारे में ज्ञान :-

उपर्युक्त सारणी से प्रदर्शित होता है कि अध्ययन क्षेत्र के कोष्टा समुदाय के प्रतिदर्श बुनकर 300 में से केवल 39 (13%) उत्तरदाता बुनकर पुस्तकालय के बारे में ज्ञान रखते हैं और इन्हें समुदाय में पुस्तकालय की क्या भूमिका है, इसकी जानकारी वे नहीं रखते हैं । अतः स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के बुनकर अधिकांशतः निरक्षर हैं एवं जो साक्षर भी हैं उनमें शिक्षा का स्तर निम्न है ।

पुस्तकालय सेवा स्वीकारने की इच्छा :-

उक्त सारणी के सरल क्रमांक 2 से जानकारी प्राप्त हुई है कि अध्ययन क्षेत्र के 300

प्रतिदर्श बुनकर में से 294 अर्थात 98 प्रतिशत बुनकर आपने बुनाई कार्य से संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए उत्सुक हैं यदि ग्रंथालय उनके क्षेत्र में स्थित हो तो । इस प्रकार कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र के लगभग तभी बुनकर परिवार अपने बुनाई व्यवसाय से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए अपने क्षेत्र में ही ग्रंथालय की स्थापना एवं इनकी सेवाएं स्वीकार करने की इच्छा रखतें हैं ।

परन्तु स्वीकृत सूचना मुख्यतः मांग हेतु गुणवत्ता तथा समयानुकूल होना चाहिए । यद्यापि सूचना महत्वपूर्ण संशाधनों की संभावना प्रस्तुत करती है और इसकी महत्ता तब तक नहीं होगी जब तक वह सुव्यवस्थित रूप से उपार्जित, प्रक्रियाबद्ध एकत्रित और समय के मांग के अनुरूप न हो । प्रत्येक सूचना में निम्नांकित गुण उसके उपयोगिता की दृष्टिगत होना चाहिए:-

1- शुद्धता, यथार्थता
2- प्रवेश पाने योग्य
3- ज्ञानवर्द्धक व्यापकता
4- अनुरूपता
5- समयानुकूलता
6- स्वच्छता
7- लचकता
8- प्रमाणिकता
9- निःशुल्क एवं
10- परिमाण योग्य

ग्रंथालय स्थापना हेतु शासन से मांग :-

सर्वे से ज्ञात हुआ है कि प्रतिदर्श इकाई 300 बुनकरों में से 9 प्रतिशत अर्थात 27 बुनकर ग्रंथालय स्थापना हेतु शासन से मांग किए जाने वालों में सम्मिलित है । शेष पुस्तकालय चेतना के अभाव में इससे अनभिज्ञता प्रदर्शित करते हैं ।

शुल्क आधारित पुस्तकालय सेवा स्वीकारने की इच्छा :-

सर्वेक्षण से मालूम होता है कि 95% बुनकर अपने रूची गत क्षेत्र में पुस्तकालय सेवा स्वीकारने की इच्छा रखते हैं । इसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र के कोष्टा समुदाय के 300 प्रतिदर्श

बुनकरों में से 80 प्रतिशत (240) बुनकर शुल्क आधारित पुस्तकालय सेवा स्वीकारने हेतु सहमत है ।

सार्वजनिक पुस्तकालय अथवा सामुदायिक सूचना केन्द्र का प्रबंध निःसंदेह प्रत्यक्ष तौर पर अलाभकारी संगठन शासन हेतु रहा है । इनके संचालन में काफी अवश्य संभावी है, फिर भी, देश व समुदाय के औद्योगिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक उन्नति के लिए ऐसी सेवाएं आवश्यक है । राज्य व केन्द्र दोनों सरकारों को प्रत्येक पंचायत के अंतर्गत हाथकरघा, अन्य लघु उद्योग तथा कुटीर उद्योग से जुड़े सभी सूचनाएं प्रदान कराने और कोष्टा समुदाय के जीवन स्तर को उन्नत करने के लिये पुस्तकालयों एवं सामुदायिक सूचना केन्द्रों की स्थापना हेतु उचित योजनाएं बनाना चहिए । यदि सरकार महसूस करती है, आर्थिक संकट उत्पन्न होने के दृष्टिगत कोष्टाओं को उनके व्यवसाय के संबंध में सूचना प्रदाय के लिए न्युनतम शुल्क निर्धारित कर सकता है ।

---000---